दयाल फर्टिलाइजर्स ग्रुप का त्रैमासिक मुख पत्र

# दयाल कृषि बुलेटिन

अंक : 05/ 2011 / 02 माह : मई से जुलाई 2011 For Private Circulation only

# धान की आधुनिक वैज्ञानिक खेती

सभी फसलों की उत्पादकता व गुणवत्ता बीज, खाद व उर्वरक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। बीज, खाद व उर्वरक के चयन में ही सावधानी रखकर किसान भाई किसी भी फसल की खेती करके भरपूर उत्पादन ले सकते हैं।

## दयाल धान की मुख्य किस्में :

| | किस्में | बीज दर (प्रति एकड़ पौध रोपाई हेतु) |
|---|---|---|
| मोटा धान | : नरेन्द्र–359, सरजू–52, पी0आर0–113, एम0टी0यू0–7029, पन्त–12 इत्यादि | – 12 किग्रा0 |
| महीन धान | : शरबती, पूसा बासमती–1, पूसा सुगन्ध–4 (1121), पूसा सुगन्ध–5 (2511) | – 5–8 किग्रा0 |
| रिसर्च / इम्प्रूव्ड धान | : महिमा गोल्ड | – 12 किग्रा0 |
| संकर (हाईब्रिड) धान | : अनमोल 1001, 1011, 1021 | – 6 किग्रा0 |

## भूमि उपचार बुवाई के पूर्व (मात्रा प्रति एकड़)

अनमोल खाद नीम प्लस – 120–160 किग्रा0
वसुधा बायोबूस्टर (N) – 1–2 किग्रा0
(नाइट्रोजन स्थिरीकारक जीवाणु)
वसुधा बायोफॉस (P) – 1–2 किग्रा0
(फास्फेट घोलक जीवाणु)
वसुधा बायोपोटाश (K) – 1–2 किग्रा0
(पोटाश वाहक जीवाणु)
अनमोल डर्मा – 1 किग्रा0
अनमोल सूडो – 1 किग्रा0

इन सभी को एक साथ मिलाकर कम से कम 24 घण्टे छायादार स्थान पर अवश्य रखें व अंतिम जुताई के समय खेत में प्रयोग करें।

## बुवाई के समय (मात्रा प्रति एकड़)

DAP (डाई) – 30 किग्रा0
BOP (बायो ऑर्गेनो फॉस) – 10 किग्रा0
सुपर एक्शन पोटाश – 8 किग्रा0
कैल्शिबोर – 3 किग्रा0
अनमोल जाईम – 4 किग्रा0
अनमोल सल्फर (D.P.) या सल्फोरिच – 10 या 8 किग्रा0
अनमोल माइक्रो – 5 किग्रा0

## बीज उपचार

उपचार : अनमोल डर्मा 10 ग्राम + अनमोल सूडो 10 ग्राम + वसुधा N 50 ग्राम मात्रा द्वारा 1 किग्रा0 बीज को उपचारित करें।

लाभ : बीज को उपचारित करके लगाने से भूमि व बीज जनित फफूँदी रोग पौधों में नहीं लगने पाता है और स्वस्थ पौध प्राप्त होती है।

पौध जड़ उपचार : एक एकड़ के लिए आवश्यक पौधों की जड़ों को अनमोल डर्मा (25 ली0 पानी में 100 ग्राम अनमोल डर्मा पाउडर) के घोल में 10 मिनट डुबाकर (रोपाई पूर्व) रखने से फफूँदजनित रोगों से बचाव होता है।

## टॉप ड्रेसिंग (मात्रा प्रति एकड़)

प्रथम (बुवाई के 15–20 दिन बाद) :
यूरिया 25 किग्रा0 + दयाल मोनो जिंक 5 किग्रा0 या दयाल जिंक सल्फेट 10 किग्रा0 + सुपर एक्शन अमृत–जी 5 किग्रा0 + अनमोल माइक्रो सुपर एक्शन 500 ग्राम मिलाकर टॉप ड्रेसिंग करें।

द्वितीय (रोपाई के 30–35 दिन बाद) :
यूरिया 25 किग्रा0 + सुपर एक्शन मोनो जिंक 300 ग्राम + 1–2 किग्रा0 दयाल गेहूँ–धान स्पेशल + सल्फोवेट DF 1 किग्रा0 मिलाकर टॉप ड्रेसिंग करें।

**पर्णीय छिड़काव (रोपाई के 40–45 दिनों पर) :** किसी भी फसल में स्वस्थ व भरपूर उत्पादन लेने के लिए पर्णीय छिड़काव एक अत्यन्त लाभकारी प्रक्रिया है। सुपर एक्शन अमृत द्रव 250 मिली0+ अनमोल माइक्रो द्रव 500 मिली0 + सूडो केयर 250 मिली0 या अनमोल सूडो 1 किग्रा0 को 250 ग्राम गुड़ के साथ 150–200 लीटर पानी में घोलकर शाम के समय (4 बजे के बाद) पत्तियों पर छिड़काव करें।

**बुवाई के 65 दिनों पर : अनमोल बून 500 मिली0 + अनमोल 0:52:34** की 1 किग्रा0 मात्रा को 150–200 ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करें।

**फसल की दुग्धावस्था (दाने बनते समय) में दयाल गेहूँ–धान स्पेशल का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है।**

नोट : जिंक वाली खाद को डी0ए0पी0 अथवा अन्य फॉस्फेटिक उर्वरक के साथ मिलाकर प्रयोग न करें।

–संजीव वर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ

# मई-जून-जुलाई माह की कृषि क्रियाऐं

## धान : रोग व कीट प्रबन्धन

यदि धान की बीमारियों व कीटों की पहचान कर समय पर उनका नियन्त्रण किया जाये तो पैदावार काफी मात्रा में बढ़ाई जा सकती है। धान की बीमारियों व कीटों के प्रमुख लक्षण और उनके नियन्त्रण के उपाय इस प्रकार हैं –

**झुलसा या बदरा रोग** : पत्तियों पर आँख के आकार के धब्बे बनते हैं। ये बीच में राख के रंग के तथा किनारों पर गहरे भूरे लाल रंग के होते हैं। कई धब्बे आपस में मिलकर पत्तियों को झुलसा देते हैं, तनों की गांठें चारों ओर से काली हो जाती हैं तथा पौधे गांठ से टूटकर नीचे झुक जाते हैं, गांठों के ऊपर का हिस्सा पूरा सूख जाता है। ग्रीवा गलन इस रोग की सबसे नुकसानदायक अवस्था है जिसमें ग्रीवा काली हो जाती है व गल जाती है, जिससे बालियों में दाने हल्के व खाली रह जाते हैं। अधिक प्रकोप होने पर बालियाँ सफेद हो जाती हैं।

**रोकथाम** : स्वस्थ खेती करें, खेत में पड़े फसल अवशेष को नष्ट करें, रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें तथा बचाव हेतु फसल पर **अनमोल सूडो** पाउडर की 1 किग्रा० या **सूडो केयर द्रव** की 250 मिली० मात्रा को 150 ली० पानी में घोलकर फसल पर 20 दिन के अन्तराल पर दो बार (रोपाई के 46 व 65 दिन) छिड़काव करें। बालियाँ निकलते समय खेत को सूखने न दें।

**पर्णछन्द सड़न (शीथ ब्लाइट)** : बाली के नीचे तने के बाहरी आवरण पर कत्थई रंग के अनियमित आकार के धब्बे दिखाई देते हैं जो बाद में सड़न पैदा करते हैं। कभी–कभी इस रोग के कारण पूरी बाली दाने रहित हो जाती है। **रोकथाम** : इस रोग के रोकथाम के लिए भी **अनमोल सूडो** या **सूडो केयर** का छिड़काव झुलसा या बदरा रोग के अनुसार ही करें। अधिक संक्रमण पर हेक्साकोनोजोल या प्रॉपीक्यूनोजोल को अनमोल सूडो या सूडो केयर के साथ मिलाकर इस्तेमाल करें।

**भूरा धब्बा या पर्णचित्ती रोग** : पत्तियों पर गोल अंडाकार छोटे भूरे धब्बे बनते हैं जो बाद में गहरे भूरे होकर आपस में मिलकर बड़े धब्बे बनाते हैं, व झुलस जाती हैं, दानों पर भी भूरे धब्बे बनते हैं तथा दाने हल्के रह जाते हैं। **रोकथाम** : स्वस्थ बीज का प्रयोग करें। अनमोल सूडो या सूडो केयर का छिड़काव झुलसा रोग या बदरा रोग के अनुसार ही करें।

**गोभ (Stem) का कीड़ा** : यह सुण्डी नर्सरी से ही पौध में आती है जो रोपाई करने के बाद 8–10 दिनों में पौधों को सुखा देती है। **रोकथाम** : अनमोल बास 1 किग्रा० को 150 ली० पानी में 250 ग्राम गुड़ के साथ स्प्रे करें।

## *मेन्था*

**मेन्था** में तेल की मात्रा बढ़ाने के लिए 1–2 किग्रा० **अनमोल माइक्रो मेन्था स्पेशल** (आशिंक चिलेटिड) व सुपर एक्शन अमृत–G 5 किग्रा० +2 किग्रा० **कैल्शिबोर** को मिलाकर प्रति एकड़ की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। यदि सल्फर का प्रयोग बुवाई के समय नहीं किया गया है तो दयाल **सल्फोरिच (बेन्टोनाइट 90% S)** की 4–8 किग्रा० मात्रा को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

## *गन्ना*

**मई–जुलाई** : गन्ने के खेत की गुड़ाई व सिंचाई करें। यदि पाइरिला कीट व तना भेदक का प्रकोप शुरू हो गया हो तो अनमोल बास की 1 किग्रा० या अनमोल बास द्रव की 250 मिली० मात्रा को 1.5 किग्रा० गुड़ के साथ 150–200 लीटर पानी (फसल की अवस्था के आधार पर पानी की मात्रा घट बढ़ सकती है) में घोलकर पौधों पर भली भांति छिड़काव करें।

**मई – टॉप ड्रेसिंग** : यूरिया 25 किग्रा० + सुपर एक्शन अमृत–G 5 किग्रा० + दयाल मोनो जिंक 2.5 किग्रा० + 3 किग्रा० कैल्शिबोर का फसल पर बुरकाव करें। यदि बुवाई के समय दयाल महाशक्तिशाली का प्रयोग न किया गया हो तो 10 किलो प्रति एकड़ की दर से टॉप ड्रेसिंग करने से भी लाभ होगा।

## *कद्दू वर्गीय सब्जियाँ (खीरा, लौकी, तौरई, तरबूज, खरबूज, व कद्दू)*

**मई** : कद्दू वर्गीय सब्जियों में सुपर एक्शन अमृत द्रव की 250 मिली० + अनमोल माइक्रो द्रव की 500 मिली० + 3 मिली० प्रति ली० अनमोल बून (द्रव) को 150 लीटर जल में घोलकर पत्तियों व तने पर छिड़काव करें जिससे फसलों में पुष्पन व बढ़वार लंबे समय तक होती रहेगी व उत्पादन भी बढ़ेगा।

**जून – जुलाई** : कद्दू वर्गीय सब्जियों में चूर्णिल आसिता (Powdery Mildew) व मृदुरोमिल आसिता से बचाव के लिए अनमोल सूडो 1 किग्रा० या सूडो केयर की 250 मिली० मात्रा + 500 ग्राम गुड को 150 से 200 ली० पानी में घोलकर पत्तियों पर भली–भांति छिड़काव करें।

## *अन्य सब्जियाँ*

**जून – जुलाई** : टमाटर, बैंगन, भिण्डी, मिर्च व अगेती गोभी वर्गीय फसलों की पौध तैयार करने के लिए नर्सरी की तैयारी करें। वसुधा 100 किग्रा० या अनमोल खाद 160 किग्रा० + 2 किग्रा० **वसुधा बायोबूस्टर (N)** + 2 किग्रा० **वसुधा बायोफॉस (P)** + 2 किग्रा० **वसुधा बायोपोटाश (K)** की मात्रा को मृदा में ठीक प्रकार से मिलायें व वर्षा के जल से बचने के लिए उठी हुई क्यारी (प्लेटफार्म) अर्थात क्यारी के चारों ओर नाली (40 सेमी० चौड़ी व 30 सेमी० गहरी) बनायें और सब्जियों का रोपण मेड़ पर करें इससे वर्षा ऋतु में अधिक जल से होने वाली हानियाँ नहीं होंगी व पौधे स्वस्थ रहेंगे। सब्जियों की पौध नर्सरी में तैयार करने से पूर्व **अनमोल डर्मा** की 5 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा० बीज को उपचारित करें, ऐसा करने से सब्जी व पौध में जड़ व तना गलन नहीं होता है व स्वस्थ पौध तैयार होती है। इस प्रकार से किसान भाई सब्जियों के महंगे बीज को नष्ट होने से बचा सकते हैं। पादप वृद्धि व अधिक उत्पादन के लिए **सुपर एक्शन अमृत–G** 5 किग्रा० + 500 ग्राम **अनमोल माइक्रो सुपर एक्शन** को पौध रोपण के 15–20 दिन बाद खेत में बुरकाव करें। नर्सरी में पौध को रोग से बचाव के लिए **अनमोल सूडो** 1 किग्रा० या **सूडो केयर** 250 मिली० + **अनमोल माइक्रो द्रव** 500 मिली० + 250 ग्राम गुड को 150 ली० पानी में घोलकर छिड़काव करें।

## *सोयाबीन*

सोयाबीन में बुवाई के समय **अनमोल बून दानेदार** 2 किग्रा० एवं टॉप ड्रेसिंग के समय **कैल्शिबोर** 2 किग्रा० + **दलहन तिलहन स्पेशल** 2 किग्रा० का प्रयोग करने पर फसल की स्वस्थ बढ़वार व पौधे का रंग गहरा हरा होता है। फूलों की संख्या बढ़ाने और अधिक फुटाव के लिये **सुपर एक्शन अमृत द्रव** 2–2.5 मिली० व **अनमोल बून द्रव** 3 मिली० प्रति लीटर पानी में घोलकर फूल बनने की अवस्था पर छिड़काव करें। इन उत्पादों को किसी भी रसायनिक उत्पादों के साथ मिलाकर भी प्रयोग कर सकते हैं।

# अधिक उत्पादन हेतु उन्नत दयाल संकर धान बीज लगायें

खरीफ में धान की फसल एक महत्वपूर्ण फसल होती है। किसान भाई संकर या इम्प्रूव्ड धान लगाकर अधिक उत्पादन ले सकते हैं। किसान भाई निम्न प्रजातियों में से किसी भी प्रजाति का चुनाव, रोपाई के समय के अनुसार करके अधिक उत्पादन ले सकते हैं :–

**अनमोल 1001**
- कम समय में पककर तैयार (105–110 दिन)
- आलू वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
- कम सिंचाई में भी अधिक उत्पादन
- ब्लास्ट, बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट व फाल्स स्मट के प्रति सहनशील

**अनमोल 1011**
- मध्यम समय में तैयार (125–130) दिन
- प्रति बाली अधिक दाने
- मध्यम लम्बे, पतले दाने, सामान्य प्रजातियों से 20 प्रतिशत अधिक उत्पादन
- ब्लास्ट, स्मट व बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट के प्रति सहनशील

**अनमोल 1021**
- 130–135 दिन में पककर तैयार
- अधिक कल्ले व लम्बी बालियाँ
- मध्यम लम्बे दाने, सामान्य प्रजातियों से 20 से 25 प्रतिशत अधिक उत्पादन
- बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट फाल्स स्मट एवं तना छेदक के प्रति सहनशील

**संशोधित धान–महिमा गोल्ड**
- 120 से 130 दिन की सामान्य अवधि में पककर तैयार
- अधिक कल्ले व दानों की अधिक संख्या
- मध्यम, पतले, छोटे आकार के दाने, खाने में अत्यन्त स्वादिष्ट

# संकर मक्का बीज लगायें, अधिक उत्पादन पायें

खरीफ सीजन मे मक्का एक मुख्य फसल है जिसका अच्छा उत्पादन लेने हेतु आवश्यक है कि किसान भाई उन्नत हाइब्रिड बीज का 8–10 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

प्रथम सिंचाई के बाद यूरिया के साथ मकई राजा 3–5 किग्रा0 प्रति एकड़ दर से प्रयोग करें जिससे मक्का का दाना मोटा, चमकदार होने से उत्पादन अच्छा प्राप्त होगा। दयाल द्वारा उत्पादित निम्न किस्मों में से किसी भी किस्म का चुनाव आवश्यकतानुसार कर सकते हैं।

**अनमोल (सफेद मक्का हेतु), अनमोल 11 (पीली मक्का हेतु), अनमोल 21 (पीली मक्का हेतु)**

## *बाजरा की उन्नत खेती हेतु सुझाव*

सिंचाई की कमी वाले क्षेत्रों में खरीफ में बाजरा एक मुख्य फसल है। मध्य जून से जुलाई तक किसान भाई दयाल की कम समय (75–78 दिनों के) में तैयार होने वाली प्रजातियाँ अनमोल 111 व अनमोल 222 लगाकर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। बीज की बुवाई हेतु 1.5–2 किग्रा0 बीज प्रति एकड़ पर्याप्त रहता है। संकर प्रजातियाँ, बाजरा की फसल में होने वाली अधिकांश बीमारियों जैसे ब्लाइट, स्मट आदि के प्रति अधिक सहनशील होने के कारण बीमारियों से मुक्त रहती है एवं उत्पादन भी अधिक होता है। दाना देशी बाजरा के समान होने के कारण दोनों ही प्रजातियों की मांग काफी बढ़ रही है।

**–कृष्ण कुमार द्विवेदी**

## *गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं का रखरखाव*

गर्मी का मौसम अपनी तीव्रता पर है। इस समय आपको अपने दुधारू पशुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अपने जानवरों को दिन में कम से कम 3–4 बार आवश्यक रूप से पानी पिलायें तथा अगर भैंस है तो दिन में 2–3 बार नहलाएँ। गर्मियों में दुधारू पशु के शरीर में खनिज तत्वों की कमी हो जाती है जिससे वह जुगाली नहीं कर पाता है तथा साथ ही साथ उसका वजन भी गिरने लगता है। अतः इस समय आवश्यक रूप से दयाल, "शक्ति" पशु आहार 400 ग्राम या दयाल, "सुपर एक्शन" 500 ग्राम प्रति लीटर दूध तथा 1 किग्रा0 शरीर के भरण–पोषण के लिए दे जिससे दुधारू पशुओं में उपरोक्त परेशानियाँ न हों। इसी समय लौहमुतना बीमारी का भी प्रकोप होता है जिससे जानवर के पेशाब में खून आता है। यह सामान्यत शरीर में कैल्शियम की कमी से होता है। अतः इस समय प्रतिदिन 100 मिली0 दयाल मिल्क टॉनिक प्रत्येक माह में दस दिन तक दें, साथ ही साथ सर्रा बीमारी के प्रकोप से बचाने हेतु जानवरों का मक्खी तथा मच्छरों से बचाव करें।

**–डा0 दिनेश पाण्डेय,** पशु आहार विभाग

## *मुर्गी पालन - व्यवसाय का एक बड़ा अवसर*

**मुर्गी पालन से लाभ :**

मुर्गी पालन के व्यवसाय में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। इसे कम क्षेत्रफल तथा बंजर अथवा बेकार भूमि में शुरू कर ब्रायलर से 4–8 सप्ताह में ही पर्याप्त आय प्राप्त की जा सकती है तथा मुर्गियों के लीटर (बिछावन) को खाद के रूप में प्रयोग कराकर भूमि को नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की प्रचुर मात्रा उपलब्ध कराई जा सकती है, साथ ही साथ मुर्गी पालन द्वारा नियमित एवं संतुलित आय को बनाये रखा जा सकता है। मुर्गियों से अण्डा उत्पादन करके भी अतिरिक्त लाभ कमाया जा सकता है।

**कैसे शुरू करें :**
- दयाल फर्टिलाइजर्स के पोल्ट्री विभाग द्वारा व्यक्तिगत रूप से इसकी संपूर्ण जानकारियां एवं सावधानियां उपलब्ध कराई जा रही हैं।
- फार्म का रूख पूरब-पश्चिम, चौड़ाई (30–35) फीट तथा लम्बाई 200 फीट तक रखी जा सकती है।
- फार्म की सतह जमीन से 1.5–2.0 फीट तक बीच की ऊंचाई 10–15 फीट साइड की दीवार 2.5–3 फीट + 4–5 फीट की लोहे की तार की जाली होना चाहिए।
- मात्र 1.5 वर्ग फिट एक बर्ड के लिए पर्याप्त

**–विकास चन्द्रा,** पोल्ट्री फीड विभाग

# सफलता की कहानी : किसानों की जुबानी

मैने अपने एक एकड़ खेत में दयाल कम्पनी का नया टिश्यू कल्चर आलू बीज 3797 (कुफरी बहार) लगाया था। जिसमें दयाल फर्टिलाइजर्स कम्पनी के उत्पाद अन्तिम जुताई के समय 5 बैग अनमोल खाद + 5 किग्रा0 मोनो जिंक + 10 किग्रा0 दयाल अनमोल जाइम जमीन में फैलाई जिससे आलू की प्रति एकड़ पैदावार (280 कट्टे) प्रत्येक 50 किग्रा0 कट्टा निकला एवं आलू की चमक व गुणवत्ता सब कुछ बहुत ही अच्छी रही थी जिसके उत्पादन एवं गुणवत्ता से मैं एवं मेरे गांव वाले सभी काफी सन्तुष्ट हैं। अतः हम अगले वर्ष से अधिक से अधिक क्षेत्रफल में दयाल बीज आलू व दयाल उत्पाद प्रयोग करेंगे और अन्य किसानों को भी सलाह देंगे।

**धर्मजीत सिंह – ग्राम बैलारा कलाँ, पो0 कुम्हेर, जनपद भरतपुर (राज0) मो0 08107329265**

मैं अपने खेतों से अच्छी उपज लेने के लिए रसायनिक खाद जैसे – यूरिया, डी.ए.पी. और पोटाश जैसे खाद का अधिक इस्तेमाल किया करता था जिससे उपज में ज्यादा इजाफा नही मिला करता था। तब मुझे दयाल फर्टिलाइजर्स के प्रतिनिधि से सम्पर्क हुआ और मैंने अपनी समस्या का समाधान पाया। इन्हीं की सलाह पर दयाल फर्टिलाइजर्स के प्रोडक्ट का इस्तेमाल अपने धान, गेहूँ, प्याज, दलहन, तिलहन की फसल में कर रहा हूँ तथा भरपूर फसल से अच्छी आय प्राप्त कर रहा हूँ।

**नवीन कुमार ग्राम–मुदफ्फरपुर, पो0 + थाना राजगीर, जिला–नालन्दा (बिहार) मो0 09835400537**

मैं एक छोटा किसान हूँ। मैंने अपने शौक से एक गाय खरीदी थी। दूध कम होने पर मैनें दयाल का **शक्ति** का 500 ग्राम सुबह व 500 ग्राम शाम को इस्तेमाल किया जो बहुत ही उत्तम गुणवत्ता का उत्पाद है। यह खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ गई। अभी मैं 10 किग्रा0 दूध दूह रहा हूँ। गाय भी चार महीना से ग्याभिन है। दूध भैंस के दूध के बराबर गाढ़ा है। दयाल पशु आहार से मैं बहुत ही सन्तुष्ट हूँ।

**हरि किशोर पाठक, सुदीन चौक, माघी भौलनी**

## दयाल के नये उत्पाद :

### दयाल महा शक्तिशाली

**विशेषताएँ :**

- सभी सूक्ष्म पोषक तत्वों की अधिक उपलब्धता
- जड़, कल्ले व तने के विकास में सहायक
- पेड़ों से फूलों (बौर) का गिरना रोक कर अधिक पैदावार बढ़ाये
- उपज व दाने का आकार बड़ा, सुन्दर व सुगठित बनाये
- रोगों के प्रति प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाये
- पाले (हिमपात) के प्रति सहनशीलता बढ़ाये
- आवश्यक एंजाइम, प्रोटीन, हारमोन, कार्बोहाइड्रेट व क्लोरोफिल का निर्माण व क्रियाशीलता बढ़ाये

**प्रयोग विधि :**

- बुवाई से पहले/अन्तिम जुताई के समय, प्रति एकड़ 5-10 किलो दयाल महा शक्तिशाली खेत में बिखेर कर प्रयोग करें
- अधिक लाभ हेतु टॉप ड्रेसिंग में भी 5 किलो मात्रा प्रति एकड़ प्रयोग करें

**फसलें :** धान, गेहूँ, गन्ना, मक्का, कपास, मैंथा, आलू, सब्जियाँ, आम, अंगूर व सभी फल, सभी दालें व तिलहन, चाय-कॉफी, तम्बाकू व पोस्ता

## टिश्यू कल्चर केला

केले की खेती में टिश्यू कल्चर केले की पौध से लेकर जैविक–रसायनिकों उर्वरकों, कीट/रोगनाशकों का समन्वित प्रयोग किया जाये तो लागत में कमी आयेगी व गुणवत्ता युक्त केले का भरपूर उत्पादन और लाभ लिया जा सकता है।

दयाल टिश्यू कल्चर पौध, अत्याधुनिक लैब व ग्रीन हाउस में कुशल वैज्ञानिकों की देखरेख में तैयार किये जाते हैं पौधों को गुणवत्ता के प्रत्येक मापदण्ड पर परख कर उपलब्ध कराया जाता है ताकि किसान भाईयों को पूरी लागत का भरपूर लाभ मिल सके।

**दयाल टिश्यू कल्चर केले की पौध से लाभ :** • वृद्धि में समानता • अधिक उपज व उत्पाद में एकरूपता, • रोगाणु/संक्रामक रोग से मुक्त • फूल का शीघ्र आना व शीघ्र फसल का तैयार होना, • अधिक पैदावार (20 से 40 किलो प्रति पौधा), **6 से 28 महीने में तीन फसलें।**
• पहली फसल पौध लगाने के 11 से 12 माह के अन्दर • दूसरी फसल 8 से 9 माह के अन्दर, तीसरी फसल 7 से 8 माह के अन्दर।
• पूरे वर्ष पौध का उपलब्ध होना।

–नीरज माहेश्वरी मो0 09792201617

## दयाल वार्षिक महोत्सव - 2011

दयाल परिवार ने अपना वार्षिकोत्सव दिनांक 14–17 अप्रैल, 2011 को पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मेरठ में आयोजित किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से आए दयाल के समस्त विपणन अधिकारी, प्रबन्धक, फैक्ट्री के कर्मचारी, प्रबन्धन मण्डल के सदस्य, निदेशक तथा प्रबन्ध निदेशक सम्मिलित हुए।

महोत्सव में मुख्य विचार **"दयाल–सदैव–अग्रणी"** पर विशेष चर्चा हुई। कार्यक्रम के दौरान सभी ने दयाल मिशन "दयाल का है सपना, खुशहाल हो हर किसान अपना" को सफल बनाने का संकल्प लिया। विपणन अधिकारियों व प्रबन्धकों को खेती व पशुपालन सम्बन्धी नई तकनीकों तथा नए आने वाले उत्पाद के बारे में भी प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर कृषि–ज्ञान सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी के साथ उत्पाद की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

DAYAL
AGRI-BUSINESS

दयाल
पशु आहार

सम्पादक : डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह – दयाल फर्टिलाइजर्स ग्रुप, परतापुर, मेरठ फोन 0121–2440130 एवं सफेदाबाद, बाराबंकी फोन : 9235401581 हेतु डायमण्ड ऑफसेट प्रिन्टर्स, हापुड़ द्वारा मुद्रित